वैश्विक संस्कृति की प्रासांगिकता में इतिहास शिक्षण के नये आयाम

शोधपत्र-शिक्षा

* डॉ. अल्पना वैद्य

वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण वृहद् विश्व आज सिमिटकर अत्यन्त लघु रुप में आकृत हो गया है। आवागमन के द्रुतगामी साधनों के अनुसंधानों ने विश्व के ओर छोर की दूरी समीप ला देने से एक राष्ट्र के नागरिक दूसरे राष्ट्रों में आने–जाने के लिये सुलभ हुए हैं, वहाँ निवासित होने, वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, रुढ़ियों, परम्पराओं एवं जीवनशैली के अध्ययन और अनुशीलन करने हेतु सहज हुए हैं। अन्य राष्ट्रों की जीवनशैली के अच्छे लगने वाले प्रत्ययों को सम्बन्धित राष्ट्र के मानव ने अपनी जीवनशैली में समावेत किये हैं। इस प्रकार एक राष्ट्र के पसंदीदा प्रत्यय दूसरे राष्ट्रों में पहुँच कर सम्बन्धित राष्ट्र की संस्कृति में समायोजित होकर नई सभ्यता एवं नई संस्कृति को उभार रहे हैं। दूसरे शब्दों में इसे जन समुदाय वैश्विक संस्कृति के नाम से पुकारकर समन्वयवादी संस्कृति स्वीकार रहा है। सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्र किसी न किसी राष्ट्र की कोई न कोई पसंदीदाशैली को अपनी जीवनशैली में ढ़ालने की जिज्ञासा और उत्सुकता लिये उसे आत्मसात कर अनुशीलन कर रहे हैं। संस्कृतियों, सभ्यताओं और जीवनशैली के इन पसंदीदा प्रत्ययों का मौलिक राष्ट्र की मौलिक संस्कृति में समायोजित होकर परिवर्तन की क्रॉंति उभारना वस्तुतः विकासोन्मुख वैश्विक संस्कृति के आवाहन का प्रतीक है।[1]

मशीनीकरण के इस युग में संचार माध्यमों के विकास के कारण सम्पूर्ण विश्व एक परिवार जैसा प्रतीत होने लगा है। मोबाइल, कम्प्युटर, इन्टरनेट, प्रिंटिंग कला के द्रुतगामी यंत्रों ने सम्पूर्ण विश्व में शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्रॉंति ला दी है। कुछ ही पलों में एक राष्ट्र में बैठा नागरिक अन्य किसी भी राष्ट्र के सम्बन्ध में अपनी आवश्यकतानुसार जानकारी प्राप्त कर सकता है। इतना ही नहीं वरन् सम्बन्धित जानकारी के मूल स्थलों के चित्रों को भी आकर्षक रुप में साकार पाता है। पृथ्वी से ऊपर नीले आसमान के ग्रह चंद्र, सूर्य, मंगल, ब्रहस्पति, शुक्र, शनि एवं अन्यान्य कई उपग्रहों को भी उसने अपनी पहुँच के अंदर लाने की चेष्टा की है। मानव के अनुसंधान इस क्षेत्र में गतिमान है। निश्चित ही वह दिन दूर नहीं जब मानव अपने प्रत्यनों से अपनी पहुँच इन ग्रहों और उपग्रहों पर बना पायेगा। वैश्विक संस्कृति को ब्रह्मांड संस्कृति में परिवर्तन के दिवास्वप्न आज के विकसित मानव की चुनौतियों में से एक है जिसे पूर्ण करने हेतु वह पूरे समर्पण के साथ तन्मय है।[2] वैश्विक संस्कृति और ब्रह्मांड संस्कृति जहॉं विकासोन्मुख हो वहॉं विश्व इतिहास की परम्परागत विषयवस्तु वैश्विक परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन की आकांक्षी अवश्य होगी और इस आकांक्षा की पूर्ति तत्कालीन इतिहास वेत्ता एवं शिक्षाविद् बुद्धिजीवी ही सुनिश्चित कर सकेंगे। इतिहास वस्तुतः व्यक्तित्व विकास हेतु एक अत्यंत अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण विषय है। बिना इतिहास के क्रमिक सोच, क्रमिक चिंतन, अतीत के सिंहावलोकन के आधार पर वर्तमान का आकलन और भविष्य के लिये भावी योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन की तकनीकियॉं सुनिश्चित कर पाना कदापि संभव नहीं है। अस्तु मानव मात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का गत्यात्मक विकास इतिहास के ज्ञान के बिना अपूर्ण है। इतिहास केवल गाथाओं, कहानियों, घटनाओं का विवरण ही नहीं है और न समसामयिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्थान पतन के समायोजन में सामाजिक जीवन–शैली का चित्रण है वरन् वस्तुतः वह सामाजिक जीवन में होने वाले क्रॉंतिकारी परिवर्तनों के स्त्रोतों से फूटी मानवीय विकास के क्रमानुगत साकारीकरण की समालोचनात्मक जानकारी है जो मानवीय मानस के क्षितिज पर विकास के सम्पूर्ण पहलुओं के समग्र प्रत्ययों का रेखांकन करती है।[3] वैश्विक संस्कृति के इस युग में इतिहास विषय की विषय–वस्तु को भी वैश्विक परिप्रेक्ष्य में ही लिखी जानी उचित होगी ताकि मानवीय मस्तिष्क का विकास मानवतावादी सोच के अनुरुप पल्लवित हो सके। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इतिहास शिक्षण निश्चित ही संकुचित दृष्टिकोणों की सृष्टि करेगा जबकि अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में लिखी जाने वाली इतिहास की विशयवस्तु मानवीय मस्तिष्क को वैश्वोन्मुखी सोच के प्रति नये आयामों की प्रशस्ति दे

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षा महाविद्यालय डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर [म.प्र.]

सकेगी। अस्तु, बदलते हुए सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास का वैश्वीकरण आज के इतिहास वेताओं के लिये अनुसंधान का विषय है जिसे वे चुनौति रुप में स्वीकारते हुए नये रुप में साकारीकृत करने हेतु नये आयाम देंगे ताकि मानवीय सोच का विकास ब्रह्मांडोन्मुखी विकास की ओर अग्रसर हो सके और मानवतावादी दर्शन उस विकास में उदात्त परि कृति के प्रत्ययों की प्रशस्ति पा सके।[4] वैश्विक संस्कृति के इस संक्रति युग में इतिहास विषय की विषयवस्तु की चुनौति आयामों को निम्नांकित चिंतन बिंदुओं में इस प्रकार परिकल्पित किया जा सकता है –

1. विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण मौलिक विषयवस्तु का अंकन वर्तमान इतिहास के पाठ्यक्रम में किया जाना–इतिहास विषय का अध्ययन मानसिक सोच के आयाम में क्रमागत सिंहावलोकन की आदत का निर्माण मनोवैज्ञानिक सत्य के आधार पर करता है जो जीवन में सफलता के लिये अनिवार्य है। अतीत की घटनाओं के परिपेक्ष्य में जब तक वर्तमान को नहीं देखा जायेगा तब तक न तो वर्तमान की स्थिति को सही रुप में समझा जा सकता है और न भविष्य को समान स्तर की घटनाओं के घटन से वंचित रखा जा सकता है। अस्तु इतिहास विषय मानसिक सोच में क्रमागत वैचारिक मंथन की प्रक्रिया को उदीप्त कर तद्नुसार निर्णय क्षमता का विकास करता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विश्व के उन प्रत्येक राष्ट्रों की सभ्यता एवं संस्कृति के उद्भव एवं विकास का अध्ययन छात्रों को कराया जाना चाहिये जिनके अभ्युदय और विकास की गति ने विश्व को महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत में गंगा और सिंधु नदी की सभ्यता, मिश्र में नील नदी की सभ्यता, प्रसिद्ध दजला और फरात की सभ्यता, चीन की सभ्यता ग्रीक की सभ्यता अन्य योरोपीय राष्ट्रों से उदित सभ्यताएँ, अफ्रीका महाद्वीपीय राष्ट्रों में विकसित सभ्यताएँ, आस्ट्रेलिया, रूस एवं अन्यान्य स्थलों में विकसित सभ्यताओं के अनुसंधानित ज्ञान की विशेषताओं से छात्रों को अवगत कराया जाना चाहिये ताकि उनमें वैश्विक संस्कृति के प्रति वैज्ञानिक सोच विकसित हो सके। मानव कल्याण के प्रति उनमें स्पंदनशीलता विकसित हो सके।[5]

2. राष्ट्रीय इतिहास की क्रमानुगत विषयवस्तु का समावेश–विश्व इतिहास के विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय इतिहास की क्रमानुगत समसामयिक जानकारी कालावधि के परिप्रेक्ष्य में दी जानी आवश्यक होगी ताकि भावी नागरिक अपने राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान विश्व इतिहास की सभ्यताओं और संस्कृतियों के परिप्रेक्ष्य में प्राप्त कर सके तथा राष्ट्रीय अस्मिता को आत्मसात कर सके। राष्ट्रीयता ही अंतर्राष्ट्रीय भावनाओं के विकास को अभिप्रेरित करती है।[6]

3. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक परिवर्तनों के आलोचनात्मक सिंहावलोकन –राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक परिवर्तनों की श्रृंखला के उन बिंदुओं को प्राथमिक स्तर पर उभारा जाना चाहिये जिनके कारणों से समाज में परिवर्तन हुए। विश्व में होने वाली क्रॉतियों के मूल में जनमानस की असहय वेदनायें और तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के दोष मुख्यतः उत्तरदाई रहे है। इन्हीं के परिणाम स्वरुप क्रॉतियॉ हुई, जीर्णशीर्ण प्रशासनिक व्यवस्थाएँ भंग हुई। राजतंत्र और सामंती व्यवस्थाएँ ध्वस्त हुई, वर्वरता और अत्याचारों का अवसान हुआ, तूफान के बाद शांति हुई और नई व्यवस्थाओं ने समाज की संरचना को नये स्वरुप में ढ़ाला। सहअस्तित्ववाद पुनः लौटाने की चेष्टाएँ की गई। इतिहास की विषयवस्तु में सामाजिक क्रॉतियों और तदन्तर्गत हुए परिवर्तनों का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिये ताकि भावी नागरिक समस्याओं के मूल को पहिचान कर वर्तमान और भविश्य की संरचना को मूर्तरुप दे सके।[7]

4. वैश्विक स्तर की राष्ट्रीय समस्याएँ एवं उनके समाधानों पर सकारात्मक सोच–राष्ट्रीय समस्याएँ आज अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप में संदर्भित होकर उभरती है। वैश्विक संदर्भो को अनदेखा कर राष्ट्रीय केन्द्र बिंदु सम्बन्धी समस्याओं पर सोचना संकुचित होगा, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के ताने–बाने ने प्रत्येक राष्ट्र को अंतर्सम्बन्धित कर लिया है। समस्याएँ यद्यपि राष्ट्रीय स्तर की ही होती है किंतु उनके मूल में अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव के मूल किसी न किसी रुप में विद्यमान होते है। अस्तु समस्या को समझना उनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को जानना, समाधान के तरीकों की तकनीकियों की खोज आदि के सिद्धांतों का समन्वय आज की इतिहास विषयवस्तु में समाविष्ट किया जाना उचित होगा। ऐतिहासिक विषय–वस्तु का चयन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में किया जाना उपयुक्त होगा।

5. वैश्विक सभ्यताओं के मानवतावादी सत्यों की पुनर्स्थापना हेतु इतिहास की विषयवस्तु का चयन –पूर्वजों द्वारा सभ्यताओं के विकास के साथ ऐसे कई सांस्कृतिक और नीतिगत तथ्यों का अनुसंधान किया था जिन्होंने समाज को स्थिरता, अनुशासन एवं मानवतावादी सैद्धांतिक प्रत्ययों से अभिसिक्त किया। ऐसे सभी तथ्यों का संकलन कर उनके ज्ञान को ऐतिहासिक बनाते हुए उससे भावी नागरिकों को संज्ञानित किया जाना चाहिये ताकि मानवतावादी वैश्विक संस्कृति की प्रतिस्थापना हो सके।[8]

6. सामाजिक विकास के नये सोपानों की संकल्पनाओं एवं उनके क्रियान्वयन की प्रविधियों का इतिहास की विषयवस्तु में समायोजन —वैश्विक संस्कृति के छात्रों में इतिहास का ज्ञान अंकित करते समय वर्तमान समाज में विकास के नये सोपानों की संकल्पनाओं एवं उनके समाधानकारी प्रत्ययों का विलयन अवश्य किया जाना चाहिये ताकि भावी नागरिक तद्नुसार अपनी सोच निर्मित कर सके।[9] ऐसा निर्मित एवं विकसित सोच भावी नागरिकों में सृजनशील चेतना के प्रत्ययों का अभिप्रेरण एवं स्फुरण उत्पन्न करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर सकेगा।

7. स्वयं एवं समाज के प्रति परिस्थितिजन्य मूल्यांकन क्षमता के विकास प्रतिमान—वैश्विक संस्कृति के इस युग में इतिहास का ज्ञान भावी नागरिकों को इस ढ़ंग से कराया जाना चाहिये ताकि उनमें समसामयिक परिस्थितियों की चुनौतियों का सामना करने के साथ ही स्वयं एवं सामाजिक जगत के प्रति अपने समायोजन मूल्यांकन के आकलन की क्षमता का विकास हो सके और उनमें ऐतिहासिक घटनाक्रम को समझते हुए नियंत्रण प्रक्रिया के नैसर्गिक सत्यों के समझने और तद्नुकूल आचरण करने की संवेदनशीलता उत्पन्न हो सके।[10]

8. जीवन स्तर के सरलीकरण एवं वैश्विक सौहार्दता पर केन्द्रीयकरण—वैश्विक संस्कृति के इस युग में भावी नागरिकों को जीवन स्तर की सरलता बनाने व वैश्विक सौहार्द के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने हेतु विषयवस्तु का चयन इस ढ़ंग से किया जाना चाहिये ताकि जीवन की विषमताएँ सुलभ एवं सुबोध बन सके। मशीनीकरण के युग में मशीनों का उपयोग और वैज्ञानिक तकनीकियों का संज्ञान जीवन को जूझन और संघर्षो से बचा सकता है और मानवीय संवेदनशीलता की उदत्तता को इस स्तर तक ऊँचाई पर पहुँचा सकता है कि मानव में वैश्विकी सौहार्दता का सोच स्थायित्व पा सके।[11]

9. इन्टरनेटीकरण, कम्प्युटरीकरण, मोबाइलीकरण एवं सूचना प्रसारण तंत्र के द्रुतगामीकरण की महत्ता एवं वैश्विक सोच के सकारात्मक आयाम—विज्ञान द्वारा सैटेलाइट के माध्यम से कम्प्युटर इन्टरनेट मोबाइल, टेलीवीजन एवं सूचना प्रसारण तंत्रों के विकासशील माध्यमों के विस्तारीकरण ने चित्रांकन प्रकाशन दृश्य—श्रव्य साकारीकरण एवं त्वरित समाचार जानने व प्रेषित करने की विधा का विस्मयकारी विकास किया है। संसार के एक कोने की सूचना दूसरे कोने में पलभर में मिल जाने से वैश्विक जागृति और जागरुकता उत्पन्न होने से मानव सोच का विकास सकारात्मक समझ लेकर उभरा है। इतिहास की विषयवस्तु का चयन इस ढ़ंग से किया जाना उचित होगा ताकि मानव सोच में सकारात्मक प्रत्ययों के साथ सृजनशीलता के नये आयाम भी पल्लवन पा सके।[12]

10. ऐतिहासिक अनुसंधानों को प्रोत्साहन —ऐतिहासिक अनुसंधानों की विधा को वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर सशक्त और सत्यान्वेत किया जाना चाहिये ताकि अतीत की मानवीय जीवनशैली, सभ्यता, संस्कृति एवं सोच के तथ्यों का एकत्रीकरण किया जाकर नवीनता से अवगत हो और उस नवीनता का उपयोग वर्तमान समाज के उन्नयन हेतु किस प्रकार समायोजितशैली निर्मित कर किया जा सके। इतिहास विषय में अनुसंधानों का अभाव होने से अतीत की अच्छाईयों से वैश्विक समाज पूरी तरह जुड नहीं पाया है। आवश्यकता है तथ्यों में से उन अच्छाईयों को खोजने की जो मानवीय जीवन को परिष्कार की उदात्तता दे सके।[13] इतिहास शिक्षण प्रारम्भिक स्तर से उच्च स्तरीय स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक निश्चित ही महत्वपूर्ण है। बिना ऐतिहासिक ज्ञान के मानवीय सोच में क्रमानुगत प्रत्ययों का समायोजन संभव न हो पाने से तर्कशील विवेचना का संज्ञान निश्चित ही दुरूह है। इसी रहस्यात्मक विज्ञता के कारण वे अपने चिंतन को सकारात्मक रुप में प्रभावी बना कर मानवता को नये सिद्धांत एवं नई प्रशस्तियाँ दे सकने में सफल हो सके।[14]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. तिवारी दिनेश कुमार ''वैश्विक संस्कृति के युग में भारत'' 1999 नवदीप प्रकाशन नई दिल्ली प .सं.23 2 झा आनंद प्रकाश ''ब्रह्मांड संस्कृति के विकसित आयाम'' निर्मल प्रकाशन पटना 2000 प .सं.21 3 उपाध्याय श्रीधर ''ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विकास की अंतर्कथा'' लेख दैनिक जागरण समाचार—पत्र 14 जुलाई 1998 प .सं.6 4 पाण्डेय राजश्री, ''इतिहास की मौलिकता और अनुसंधान'' ज्ञान प्रकाशन देहरादून 1997 प .सं.19 5 वाजपेयी हरिकिशण, '' विभव सभ्यताओं का उद्भव और विकास'' 6 सक्सेना एन.आर. स्वरूप एवं चतुर्वेदी शिखा, ''उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षक''राजप्रिंटर्स, 103/2 जयदेवी, नगर,मेरठ, प .सं. 453—55 7 श्रीमती शर्मा, आर.के. एवं भारद्वाज दिनेशचन्द्र, ''इतिहास शिक्षण'' राधा प्रकाशन मंदिर पर शुरामपुरी, नगला अजीता आगरा 2003, प .सं. 3.—33 8 यादव एम.एस., एवं लक्ष्मी टी.के. एस.''कन्सेप्च्यूअल इनपुट्स फॉर सेकेण्डरी टीचर एज्यूकेशन दी इन्स्ट्रक्शनल रोल'' एनसीईआरट, नई दिल्ली 2003 प .सं. 81—82 9.चौधरी प्रकाशचन्द्र, ''इतिहास की सामाजिक संकल्पनाएँ सृजन प्रकाशन, नईदिल्ली, 2000 प .सं.12 10 घोश के.डी. ''क्रिए टीव्ह टीचिंग ऑफ हिस्ट्री'', ऑक्सफोर्ड यूनिर्वसिटी प्रेस, 1951 प .सं. 17 11 दुबे मनीश ''संक्रमण काल की मानवता'' लेख दैनिक भास्कर दिनांक 27 मार्च 1996 प .स.6 12 योजना आयोग 2002 का प्रकाशन अभिलेख '' सूचना तंत्र के विकासोन्मुखी आयाम'' प .सं.1—2 13 डॉ. मुखर्जी एम.के. ''इतिहास में नये अनुसंधान'' रवीन्द्र प्रकाशन नई दिल्ली 1967 प .सं. 41 14 त्यागी गुरुसरनदास ''इतिहास शिक्षण'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1995 प .सं. 22—25